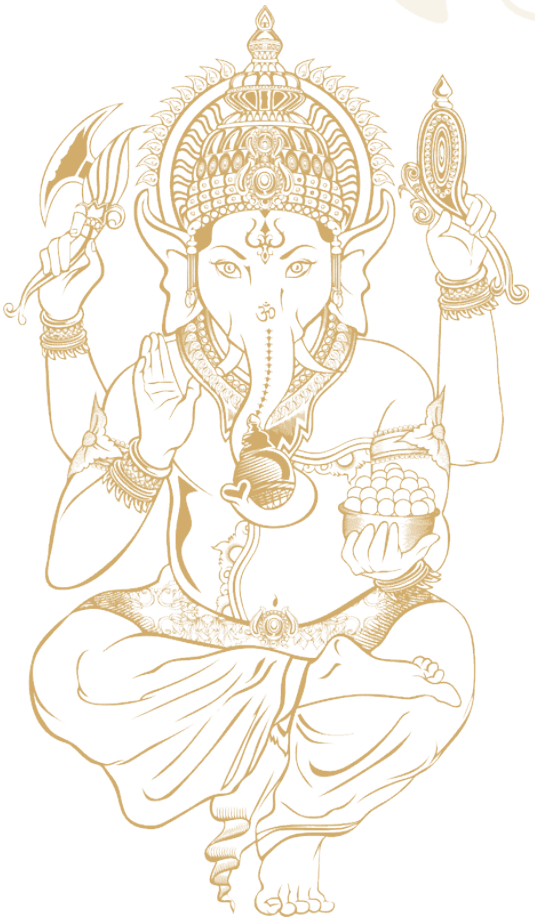

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121444901

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121444901 Date: 01/03/2026

| | | |
|---|---|---|
| पुल्लिंग | लिंग | स्त्रीलिंग |
| 30/06/1996 | जन्म तिथि | 07/12/2000 |
| रविवार | दिन | गुरुवार |
| घंटे 05:25:00 | जन्म समय | 18:12:00 घंटे |
| घटी 00:07:52 | जन्म समय(घटी) | 27:37:49 घटी |
| India | देश | India |
| Bilaspur | स्थान | Bilaspur |
| 31:18:00 उत्तर | अक्षांश | 31:18:00 उत्तर |
| 76:48:00 पूर्व | रेखांश | 76:48:00 पूर्व |
| 82:30:00 पूर्व | मध्य रेखांश | 82:30:00 पूर्व |
| घंटे -00:22:48 | स्थानिक संस्कार | -00:22:48 घंटे |
| घंटे 00:00:00 | ग्रीष्म संस्कार | 00:00:00 घंटे |
| 05:21:51 | सूर्योदय | 07:08:52 |
| 19:30:56 | सूर्यास्त | 17:19:54 |
| 23:48:33 | चित्रपक्षीय अयनांश | 23:51:55 |

| | | |
|---|---|---|
| मिथुन | लग्न | मिथुन |
| बुध | लग्न लग्नाधिपति | बुध |
| वृश्चिक | राशि | मेष |
| मंगल | राशि-स्वामी | मंगल |
| ज्येष्ठा | नक्षत्र | अश्विनी |
| बुध | नक्षत्र स्वामी | केतु |
| 4 | चरण | 1 |
| शुक्ल | योग | वरियान |
| वणिज | करण | विष्टि |
| यू-युवराज | जन्म नामाक्षर | चू-चुन्नी |
| कर्क | सूर्य राशि(पाश्चात्य) | धनु |
| विप्र | वर्ण | क्षत्रिय |
| कीटक | वश्य | चतुष्पाद |
| मृग | योनि | अश्व |
| राक्षस | गण | देव |
| आद्य | नाड़ी | आद्य |
| मृग | वर्ग | सिंह |

# ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

| विंशोत्तरी | | अंश | राशि | ग्रह | राशि | अंश | विंशोत्तरी | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| बुध 2वर्ष 4मा 17दि | | 14:26:18 | मिथु | लग्न | मिथु | 05:22:31 | केतु 6वर्ष 4मा 7दि | |
| सूर्य | | 14:40:29 | मिथु | सूर्य | वृश्चि | 21:51:27 | शुक्र | |
| 16/11/2025 | | 28:07:55 | वृश्चि | चंद्र | मेष | 01:13:42 | 16/04/2007 | |
| 17/11/2031 | | 18:29:19 | वृष | मंगल | कन्या | 26:31:57 | 16/04/2027 | |
| सूर्य | 06/03/2026 | 01:31:50 | मिथु | बुध | वृश्चि | 11:49:17 | शुक्र | 16/08/2010 |
| चन्द्र | 05/09/2026 | 19:31:44 | धनु व | गुरु व | वृष | 11:00:48 | सूर्य | 16/08/2011 |
| मंगल | 10/01/2027 | 18:04:09 | वृष व | शुक्र | मक | 05:09:16 | चन्द्र | 16/04/2013 |
| राहु | 05/12/2027 | 13:17:25 | मीन | शनि व | वृष | 02:12:05 | मंगल | 16/06/2014 |
| गुरु | 22/09/2028 | 19:19:03 | कन्या व | राहु व | मिथु | 22:01:07 | राहु | 16/06/2017 |
| शनि | 04/09/2029 | 19:19:03 | मीन व | केतु व | धनु | 22:01:07 | गुरु | 15/02/2020 |
| बुध | 12/07/2030 | 09:45:54 | मक व | हर्ष | मक | 23:45:48 | शनि | 16/04/2023 |
| केतु | 17/11/2030 | 03:03:06 | मक व | नेप | मक | 10:41:13 | बुध | 14/02/2026 |
| शुक्र | 17/11/2031 | 06:58:12 | वृश्चि व | प्लूटो | वृश्चि | 18:59:04 | केतु | 16/04/2027 |

व - वक्री  स - स्थिर
अ - अस्त  पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

**23:48:33  चित्रपक्षीय अयनांश  23:51:55**

## लग्न-चलित

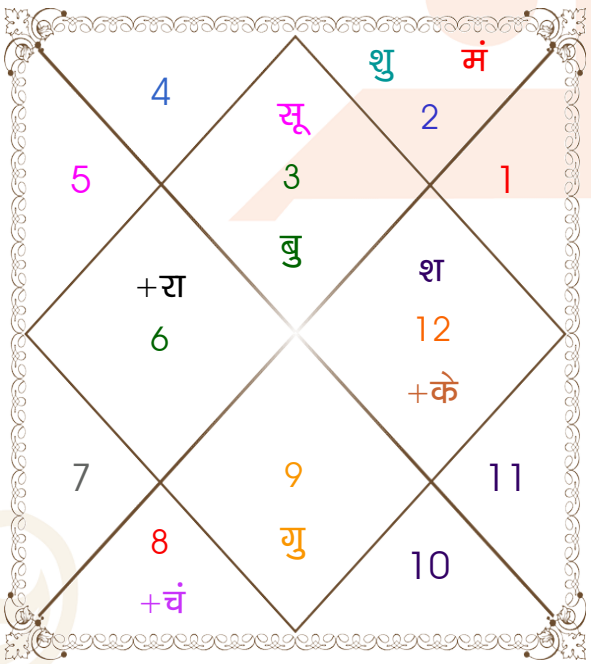


## लग्न-चलित

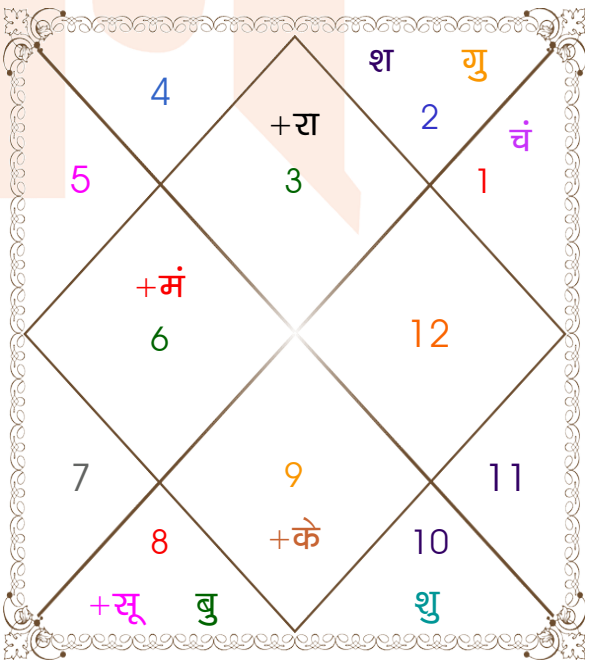

## अष्टकूट गुण सारिणी

| कूट | वर | कन्या | अंक | प्राप्त | दोष | क्षेत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ण | विप्र | क्षत्रिय | 1 | 1.00 | -- | जातीय कर्म |
| वश्य | कीटक | चतुष्पाद | 2 | 1.00 | -- | स्वभाव |
| तारा | अतिमित्र | सम्पत | 3 | 3.00 | -- | भाग्य |
| योनि | मृग | अश्व | 4 | 3.00 | -- | यौन विचार |
| मैत्री | मंगल | मंगल | 5 | 5.00 | -- | आपसी सम्बन्ध |
| गण | राक्षस | देव | 6 | 1.00 | -- | सामाजिकता |
| भकूट | वृश्चिक | मेष | 7 | 0.00 | हाँ | जीवन शैली |
| नाड़ी | आद्य | आद्य | 8 | 0.00 | हाँ | स्वास्थ्य/संतान |
| कुल : | | | 36 | 14.00 | | |

कुल : **14 / 36**

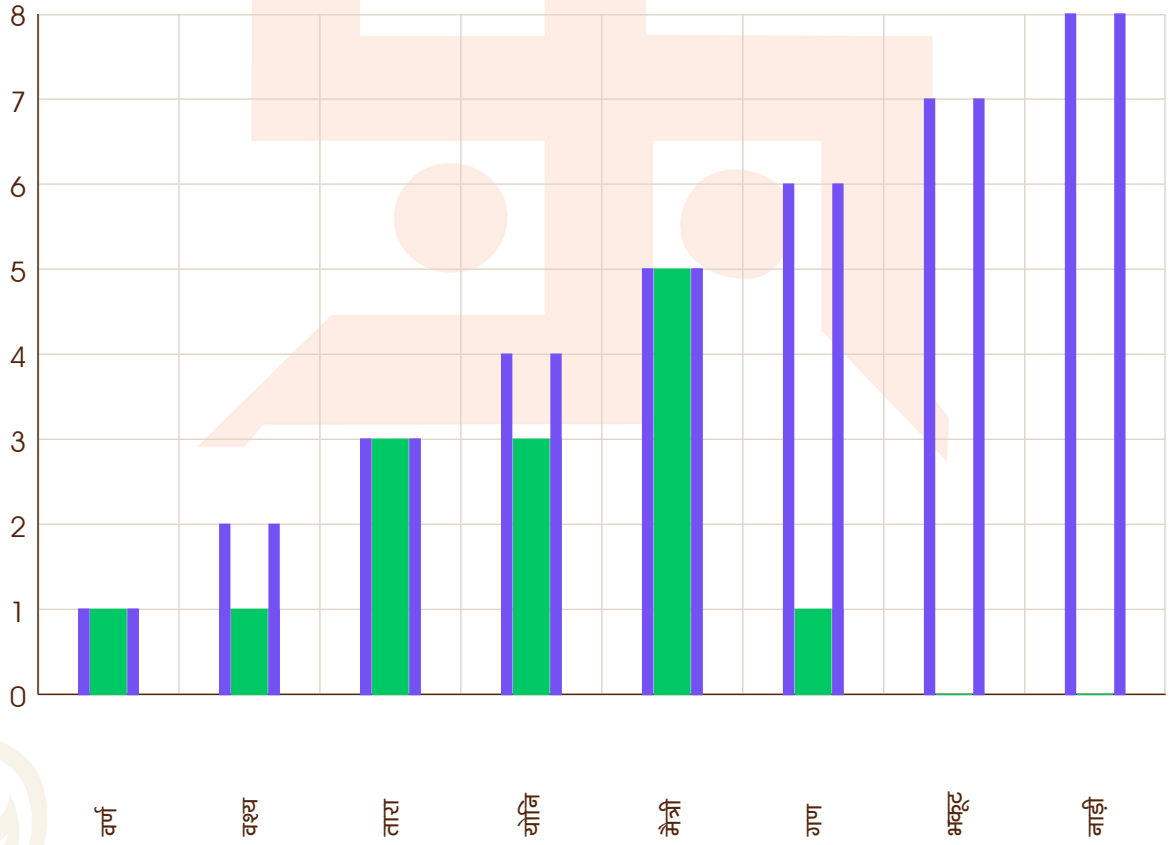

# अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

। का वर्ग मृग है तथा । का वर्ग सिंह है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार । और । का मिलान ठीक नहीं है।

## मंगलीक दोष मिलान

। मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

**व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।**
**द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।**

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल । कि कुण्डली में द्वादश भाव में वृष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

। मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

**यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।**
**अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।**

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि । कि कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

**शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।**
**तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।**

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु । कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

। तथा । में मंगलीक मिलान ठीक है।

## निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

# अष्टकूट फलादेश

## वर्ण

। का वर्ण ब्राह्मण तथा । का वर्ण क्षत्रिय है। अतः यह मिलान अति उत्तम है। जिसके प्रभाव ो। में अपने पति के प्रति अगाध प्रेम, श्रद्धा एवं ।म्मान की भावना रहेगी। कभी-कभी क्षत्रिय खून की गर्मी भी ।मय-समय पर उबाल मारने के कारण ।मय-समय पर । आक्रामक व्यवहार कर ।कती हैं हालांकि उनका व्यवहार कभी भी अनियंत्रित नहीं होगा।। सदैव अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन भली-भांति करती रहेंगी तथा वे दैव प्रशंसा की पात्र रहेंगी।

## वश्य

। का वश्य कीट है एवं । का वश्य चतुष्पद है। जिसके कारण यह मिलान औसत मिलान है। चतुष्पद एवं कीट दो भिन्न प्राणी हैं। किंतु दोनों का प्रकृति में ।ह-अस्तित्व है। दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद अलग होते हुए भी दोनों एक-दूसरे के लिए घातक नहीं होंगे। इसी प्रकार, । चतुष्पद अर्थात् पशु एवं । कीट वश्य की होने के कारण दोनों के स्वभाव, व्यवहार, गुण, पसंद/नापसंद में अंतर होते हुए भी दोनों के बीच वैवाहिक ।बंध ।मान्य ही रहने की प्रबल ।भावना है। दोनों का स्वभाव गंभीर एवं ।कोची रहेगा तथा दोनों ौहार्दता एवं प्रेम ो अपना जीवन यापन करते रहेंगे ।साथ ही अपने-अपने कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते रहेंगे।

## तारा

। की तारा अतिमित्र तथा । की तारा ।म्पत है। अतः दोनों की तारा अनुकूल होने के कारण यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह विवाह वैवाहिक जीवन एवं परिवार के लिए चहुंमुखी ।मृद्धि का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। ।थ ही दोनों एक-दूसरे के लिए काफी भाग्यशाली ।बित होंगे।। हमेशा । के ।थ मित्रवत व्यवहार करता रहेगा तथा उसे असीम प्रेम एवं प्यार देता रहेगा। इनके बच्चे भी काफी बुद्धिमान, भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं ।फल होंगे।

## योनि

। की योनि मृग है तथा । की योनि अश्व है। अर्थात दोनों की योनि ।मान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का ।बंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में ौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को ।हयोग करेंगे। आपसी ।मझ एवं विश्वा। की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में ।भी कार्य आपसी ।हमति ो करेंगे एवं उनमें ।फलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के ुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये ोत बनेंगे तथा अच्छी आय के ।थ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में ुख ।मृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं ौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के

प्रति अपनापन महसू। करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। ाथ ही ाभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों े उत्पन्न ंतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में ाफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में ाफलता इनके कदम चूमेगी। इ। प्रकार इनका वैवाहिक जीवन ुखमय जीवन ही रहेगा।

## मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में । एवं । दोनों के राशि स्वामी ामान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार े अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि े यदि । एवं । दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा ाथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का ाहयोग करते रहेंगे। इनका प्रया। रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति ाबित कर ाकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, ाफल एवं यशस्वी होंगे।

## गण

। का गण राक्ष। तथा । का गण देव है। अर्थात । का गण । के गण े श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण । निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो ाकते हैं। ाथ ही । का । के ाथ क्रूर व्यवहार करने की ंभावना बनी रह ाकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर ाकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। । हमेशा हर कदम पर ामझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का ंबंध बना रहे।

## भकूट

। से । की राशि षष्ठम भाव में स्थित है तथा । से । की राशि अष्टम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। जिसके कारण । लाइलाज बीमारी े ग्रस्त हो ाकते हैं तथा अक्सर उनके जलने अथवा दुर्घटनाग्रस्त होने की ंभावना बनी रहेगी। । को स्वास्थ्य ंबंधी ामस्याएं हो ाकती हैं तथा परिवार के ादस्यों े वैमनस्य होने की ंभावना भी रहेगी। पति-पत्नी के बीच वैचारिक मतभेद रह ाकते हैं तथा अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे। दोनों के बीच तनावपूर्ण स्थिति पूरे परिवार के लिए ामस्या एवं पीड़ा बन जायेगी। मुकदमेबाजी होने े अलगाव एवं तलाक की ंभावना भी रहेगी।

## नाड़ी

। की नाड़ी आद्य है तथा । की नाड़ी भी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी ामान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि े दोषपूर्ण है। अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। । एवं । दोनों की आद्य नाड़ी होने े, दम्पत्ति वात े ंबंधित बीमारियों एवं रोगों के शिकार हो ाकते हैं। ज्योतिषीय दृष्टि े ऐसे दम्पत्ति जिनकी नाड़ी एक ही हों, उनकी ंतानें

रक्ताल्पता, रक्त में हीमोग्लोबिन की कमी का शिकार हो ।कते हैं। वे पढ़ाई एवं कार्य में ।केन्द्रण की कमी जैसी व्याधियों एवं परेशानियों के शिकार हो ।कते हैं अथवा बचपन या किशोरावस्था में ही उनकी मृत्यु हो ।कती है।

# मेलापक फलित

## स्वभाव

। की राशि जलतत्व युक्त वृश्चिक तथा । की राशि अग्नितत्व युक्त मेष राशि है। जल एवं अग्नि में नैसर्गिक विषमताओं के कारण । और । के मध्य स्वभावगत असमानताएं होंगी जिससे दाम्पत्य ।बधों में तनाव रहेगा तथा वैवाहिक जीवन के ुख में न्यूनता आएगी। अतः मिलान विशेष अच्छा नहीं रहेगा।

। एवं । की राशि का स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव े। और । की प्रवृति परस्पर ।मंजस्यशील होंगी जिससे ।बधों में मधुरता का भाव उत्पन्न होगा तथा एक दूसरे के गुणों की वे प्रशंसा करेंगे एवं कमियों की उपेक्षा करेंगे जिससे परस्पर ।हयोग ।हानुभूति तथा ।मर्पण का भाव रहेगा। वे ुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण ।हयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। फलतः वैवाहिक जीवन ुख एवं आनंद पूर्वक व्यतीत होगा।

। और । की राशि परस्पर षष्ठ एवं अष्टम भाव में पड़ती है। शास्त्रानुसार यह प्रबल भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव े उपरोक्त शुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा परस्पर ।बधों में तनाव तथा कटुता का भाव उत्पन्न होगा फलतः एक दूसरे के प्रति उपेक्षा तथा उदासीनता का भाव रहेगा एवं ुख दुख में किसी भी प्रकार का ।हयोग करने के लिए उद्यत नहीं होंगे। अतः अधिकांशतया । और । कष्ट एवं परेशानी की ही अनुभूति करेंगे।

। का वश्य कीट तथा । का वश्य चतुष्पद है। अतः । और । की अभिरूचियों में ।मानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी अनुकूलता रहेगी एवं काम ।बधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा ।न्तुष्ट करने में ।मर्थ रहेंगे।

। का वश्य ब्राह्मण तथा । का वर्ण क्षत्रिय है। इसके प्रभाव े। की शैक्षणिक शास्त्रीय तथा धार्मिक कार्य कलापों में रूचि रहेगी परन्तु । पराक्रमी एवं ।हसिक कार्यो को ।म्पन्न करेंगी फलतः कार्य क्षमता अनुकूल रहेगी एवं कार्य क्षेत्र में भी ुदृढ़ता का भाव रहेगा।

## धन

। की तारा अतिमित्र तथा । की तारा ।म्पत है। अतः इसके शुभ प्रभाव े इनकी आर्थिक स्थिति ुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में ।मर्थ होंगे। ।थ ही भकूट का प्रभाव भी ।म होगा तथा कोई शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा। लेकिन मंगल का अशुभ प्रभाव । की आर्थिक स्थिति पर रहेगा परन्तु कुल स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा तथा । और । समृद्धि े युक्त होकर जीवन व्यतीत करने में ।मर्थ होंगे।

। भाग्यशाली तथा धनाढ्य होंगी तथा । के शुभ प्रभाव े अपने धन एवं वैभव की अभिवृद्धि करने में ।मर्थ होंगी लेकिन मंगल के प्रभाव े। यदा कदा मुक्त हाथों े व्यय करेंगे। अतः । को अपनी ऐसी प्रवृति पर नियंत्रण रखना चाहिए।

## स्वास्थ्य

। और। दोनों ही आद्य नाड़ी में उत्पन्न हुए है। यद्यपि प्रथम दृष्टि में यह नाड़ी दोष बनता है परन्तु इनका जन्म विभिन्न नक्षत्रों में हुआ है तथा इनकी राशि का स्वामी एक ही ग्रह है। अतः नाड़ी दोष भंग हो जाता है। लेकिन मंगल का इन दोनों के स्वास्थ्य पर प्रभाव रहेगा जिससे । और। दोनों रक्त या पित ंबंधी रोगों ो कष्ट प्राप्त करेंगे।। हृदय ंबंधी परेशानी तथा ंभोग शक्ति की शिथिलता की अनुभूति करेंगे जबकि। को स्त्रीजन्य गुप्त एवं धातु रोगों तथा मासिक धर्म ंबंधी अनियमिताओं ो कष्ट प्राप्त करेंगी। अतः उपरोक्त दुष्प्रभावों में न्यूनता लाने के लिए दोनों को हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवा। रखने चाहिए।

## संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि ो। और। का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव ो उन्हें उचित मय पर ंतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। ाथ ही बच्चों के जन्म में भी ामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग ो करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त। और। के पुत्र एवं कन्या ंतति की ंख्या मान होगी।

प्रसव के विषय में। के मन में पहले ो ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन। को इ। विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा ामान्य रूप ो गर्भावस्था का मय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में। को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा ुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में फल होंगी। ाथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष ो। और। सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता ो उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। ाथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य म्पन्न नहीं करेंगे। इ। प्रकार। और। का पारिवारिक जीवन ुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

## ससुराल-सुश्री

। के अपनी ाी से ंबधों में अनुकूलता तथा मधुरता रहेगी तथा उनकी तरफ ो। किसी भी अनावश्यक मस्या या असुविधा का ामना नहीं करना पड़ेगा।। के हृदय में उनके प्रति ोवा भाव रहेगा तथा अपनी ोवा के द्वारा उन्हें प्रसन्न तथा न्तुष्ट रखने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। यद्य पि यदा कदा इनके मध्य मतभेद या विवाद भी होंगे लेकिन यह अल्प मय के लिए होगा तथा ामान्यतया ंबधों में मधुरता बनी रहेगी।

उनके सुर ो। को विशेष स्नेह म्मान तथा अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी तथा के द्वारा। को मय मय पर मस्याओं तथा व्यवधानों का ामना करना पड़ेगा लेकिन देवर एवं ननदों ो। के अत्यंत ही स्नेह एवं ौहार्द पूर्ण ंबध रहेंगे तथा उनसे इन्हें पूर्ण म्मान तथा हयोग मिलेगा। ाथ ही परस्पर ंबधों में मित्रता का भाव रहेगा तथा आपसी

समस्याओं तथा ुख दुख में एक दूसरे को अपना हयोग प्रदान करते रहेंगे। इ प्रकार। के ि ससुर का दृष्टिकोण मान्यतया अनुकूल नहीं रहेगा।

## ससुराल-श्री

। के अपनी ि से बध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण इनमें विचार वैभिन्यता रहेगी लेकिन यदि दोनों परस्पर मंजस्य एवं बुद्धिमता का व्यवहार करें तो उपरोक्त मतभेदों में न्यूनता आएगी तथा बधों में वृद्धि के भी अवसर बनेंगे।

साथ ही सुर भी परस्पर बधों में विवाद तथा तनाव युक्त वातावरण रहेगा जिससे न ही। उनको यथोचित मान म्मान प्रदान करेंगे तथा वे भी इन्हें विशेष अपनत्व तथा स्नेह का भाव अल्प ही प्रदान करेंगे। लेकिन ाले एवं ालियों बध अच्छे रहेंगे तथा परस्पर स्नेह हयोग तथा हानुभूति का भाव रहेगा। इनके बधों में मित्रता का भाव भी रहेगा जिससे परस्पर मुक्त भाव वार्तालाप होता रहेगा। इ प्रकार सुराल वालों का दृष्टिकोण। के प्रति अनुकूल रहेगा तथा उन्हें प्रसन्न तथा न्तुष्ट रखने में नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।